Report: रणनीतिक संचार: सहमतियों का निर्माण और भारत

)Strategic Communication: Manufacturing of Consent and India)

By Mr. Om Prakash Das

17 अप्रैल 2023 की सोमवार 'सुबह की बैठक' में, ओमप्रकाश दास, रिसर्च फेलो, मनोहर पर्रिकर रक्षा अध्ययन और विश्लेषण संस्थान, ने "रणनीतिक संचार: सहमतियों का निर्माण और भारत)Strategic Communication: Manufacturing of Consent and India)" विषय पर एक व्याख्यान दिया। व्याख्यान की अध्यक्षता डॉ. राजीव नयन ने की और बैठक में मेजर जनरल)डॉ.) बिपिन बख्शी (सेवानिवृत्त(के साथ संस्थान के अन्य स्कॉलर्स की उपस्थित रहे ।

सारांशः

सामरिक – रणनीतिक हित सिर्फ सीमाओं तक सीमित नहीं होते है, बल्कि यह सीमाओं से बहुत आगे तक जाते हैं। वैश्विक भूराजनीति में मनोवैज्ञानिक युद्ध या लोक - राजनय की भी एक महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इसके माध्यम से ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुंचने की कोशिश की जाती है। इस पूरी प्रक्रिया में नैरेटिव कथानक)) का निर्माण तो होता ही है, लेकिन ये आगे जाकर "सूचना का शस्त्रीकरण" भी कर सकता है। 'रणनीतिक संचार' एक विकसित होती हुई अवधारणा है, जिसकी संरचना अभी भी पूर्ण रूप से विकसित होने की प्रक्रिया में है। 'रणनीतिक संचार' को भारतीय परिप्रेक्ष्य में समझें तो, भारत द्विपक्षीय और बहुपक्षीय कूटनीति और राजनय के जरिए एक व्यापक कथानक के निर्माण की कोशिश करता रहा है। इसमें भारत की 'सॉफ्ट पावर' का भी एक महत्वपूर्ण स्थान रहा है, जो भारत की विदेश नीति का ज़रूरी हिस्सा भी है। पिछले पांच सालों में व्यापक रूप से 'सहमतियों के निर्माण' की प्रक्रिया और उसके उपयोग को दक्षिण पूर्व एशिया में -देखा जा सकता है। एक बड़े स्तर पर, यहाँ मीडिया स्वामित्व की प्रकृति बदल रही है। साथ ही मीडिया की राजनीतिक - आर्थिक सरंचनाओं में भी बदलाव हो रहा है। जिसका उपयोग चीन विशेषकर अपनी 'सॉफ्ट पावर '

के विस्तार में करता रहा है, जो उसकी 'रणनीतिक संचार' का ही हिस्सा है। भारतीय परिप्रेक्ष्य में भी यह साफ़ दिखाई देता है कि कैसे मई 2020 के बाद से, चीनी मीडिया)जैसे ग्लोबल टाइम्स, चाइना- डेली और शिन्हुआ) ने भारत पर भ्रमित करने वाले मीडिया सामग्रियों का हमला व्यापक रूप से बढ़ा दिया है।

विस्तृत रिपोर्टः

मुख्य वक्ता को आमंत्रित करने से पूर्व डॉ. राजीव नयन ने 'रणनीतिक संचार: सहमतियों का निर्माण और भारत' विषय पर अपने विचारों को प्रकट किए और 'सहमतियों के निर्माण' संकल्पना की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को दर्शकों के सामने रखा। ओमप्रकाश दास ने अपने व्याख्यान की शुरुआत 'रणनीतिक संचारविषय ' की व्याख्या से की और कहा की सामरिक – रणनीतिक हित सिर्फ सीमाओं तक सीमित नहीं होते है बल्कि यह सीमाओं से आगे तक जाते है। वैश्विक भूराजनीति में मनोवैज्ञानिक युद्ध या लोक राजनय की भी एक महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। साथ ही कोशिश यह भी होती है कि इसके माध्यम से ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पंहुचा जाये। वक्ता के अनुसार, वास्तव में इस पूरी प्रक्रिया में एक विशेष तरह के नैरेटिव (कथानकका निर्माण भी (होता है। यही प्रक्रिया आगे जाकर 'सूचना के शस्त्रीकरणका ' रूप धारण कर लेता है। इसके उदाहरण के रूप में, दूसरे विश्वयुद्ध - और उसके बाद शीत युद्ध के दौर में विभिन्न टकरावों में दुष्प्रचार के उपयोग के रूप में देखा जा सकता है।

ओमप्रकाश दास के अनुसार इस सूचनायुद्ध की एक प्रक्रिया होती - है जो सूचना से कथानक और कथानक से सहमति निर्माण के रूप में परिवर्तित होती है। ये सहमतियां तभी संभव हो पाती है जब सूचनाओं और दुष्प्रचार का हमला एक 'Grey Zone' का निर्माण करता है। यही 'Grey Zone' एक भ्रम

का निर्माण करता है जो बाद में जाकर 'अप्रत्यक्ष' सहमति का कारण बनता है। सूचनायुद्ध की व्याख्या - करते समय वक्ता ने, महाभारत के एक दृष्टांत का उदाहरण दिया, जिसमें युधिष्ठिर, द्रोणाचार्य से कहते हैं अश्वत्थामा" हतो हता, नरो वा कुञ्जरो वा यह एक ऐसी "परिस्थिति का जीवंत उदाहरण है, जिसमें सूचना "Grey Zone" का निर्माण करती है। वक्ता आगे कहते हैं कि 'रणनीतिक संचार' एक विकसित होती हुई अवधारणा है। जिसे मौखिक संदेशों, छपे संदेशों, दृश्यात्मक और अन्य माध्यमों की साझा कोशिशों से अंजाम दिया जाता है। इसका उद्देश्य लक्षित दर्शकों को सूचित, प्रभावित और सोच को नई संरचना में ढालना होता है। वक्ता 'रणनीतिक संचार' की व्याख्या के लिए, अमेरिकी रक्षा विभाग के द्वारा दी गयी परिभाषा को सामने रखते हैं, जो 'रणनीतिक संचार' की प्रक्रिया को "राष्ट्र की सारी क्षमताओं के उपयोग से समन्वयित कार्यक्रमों, योजनाओं, संदेशों और उपकरणों के ज़रिए पूरा करती है।" इसके बाद, वक्ता ने 'रणनीतिक संचार' के भारतीय नज़रिये की व्याख्या की और कहा की ये एक लगातार चलने वाली प्रक्रिया है, जिसमें द्विपक्षीय और बहुपक्षीय कूटनीति और राजनय के ज़रिए एक व्यापक कथानक का निर्माण किया जाता है। इसमें भारत की 'सॉफ्ट पावर' की भी एक महत्वपूर्ण भूमिका रही है, और ये भारत की विदेश नीति का ज़रूरी हिस्सा भी है।

वक्ता आगे जाकर, संचार के भारतीय नज़रिये की व्याख्या करते हुए, पूर्व राजदूत योगेंद्र कुमार के उद्धरण का उपयोग करते है, जिसके अनुसार 'रणनीतिक संचार', "अपने 'संदेश' को विविध संचार माध्यमों का उपयोग करते हुए, एक व्यापक लक्षित दर्शकों तक पहुंचना होता है।" इसके बाद ओमप्रकाश दास, 'नेटो स्ट्रैटेजिक कम्युनिकेशन सेंटर फॉर एक्सीलेंस' के द्वारा 'हाईब्रीड खतरे और सूचना परिदृश्य' के संदर्भ में की गयी व्याख्याओं पर प्रकाश डालते है। जिसमें हाइब्रिड ख़तरों में 'रणनीतिक संचार' की भूमिका की व्याख्या की गई है, जिसमें 'मीडिया' का उपयोग निर्णायक होता है।

यह समझना बेहद आवश्यक है कि दर्शक सूचनाओं को कैसे ग्रहण, व्याख्यायित और उपयोग करता है। वक्ता, 'सहमतियों का निर्माण' विषय के उद्भव पर प्रकाश डालते हुए बताते हैं। वो कहते हैं कि नोअम चोम्स्की (Noam Chomsky) और एडवर्ड हरमन)Edward S. Herman) ने 'सहमतियों के निर्माण' की प्रक्रिया को 'प्रोपगेंडा थ्योरी' के अंतर्गत पांच फ़िल्टरों (स्वामित्व, विज्ञापन, सूचना के स्रोत, फ्लैक और गैर(वामपंथी - की भूमिका निर्धारित की है।

वक्ता के अनुसार, दक्षिण-पूर्व एशिया क्षेत्र की बड़ी शक्तियों ने पिछले पांच सालों से व्यापक रूप से 'रणनीतिक संचार' का उपयोग अपने पक्ष में सहमतियों के निर्माण में किया है। एक बड़े स्तर पर इस क्षेत्र में मीडिया स्वामित्व की प्रकृति बदल रही है। साथ ही राजनीतिक- आर्थिक सरंचनाओं में बदलाव हो रहा है और चीन के पक्ष में 'सॉफ्ट पावर' को जनता तक आक्रामक तरीके से पहुंचाया जा रहा है। इस सन्दर्भ में वक्ता ने कंबोडिया, ताइवान, फिलीपींस और थाईलैंड देशों में मीडिया के उदाहरण दिए। कंबोडिया में 'नाइस टीवी' (2017 में चीन स्थित NICE संस्कृति निवेश समूह और कंबोडियाई सरकार के बीच संयुक्त उद्यमकी (स्थापना, फिलीपींस में प्रत्यक्ष स्वामित्व के माध्यम से जनसंचार माध्यमों की राजनीतिकआर्थिक - संरचना में बड़े परिवर्तन, ताइवान में चीन से सहानुभूति रखने वाले व्यक्तियों या समूहों द्वारा ताइवान के मीडिया संस्थानों का अधिग्रहण, इस प्रक्रिया के कुछ उदाहरण हैं। वहीं, थाईलैंड में सरकार, सेना और सत्ता के नज़दीक व्यक्तियों के खिलाफ मीडिया रिपोर्टिंग में बेहद कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है। इंडोनेशिया में 'सिन्हुआ' ने 'बहासा इंडोनेशिया' में सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म की शुरुआत की है, साथ ही 'मीडिया इंडोनेशिया' और 'द जकार्ता पोस्ट' में 'सिन्हुआ' और 'चाइना डेली' के लेखों को पुनः प्रकाशित करने के लिए समझौता भी हुआ है। इतना ही नहीं, इंडोनेशिया में चीनी भाषा के समाचार पत्रों में बीजिंग समर्थक सामग्रियों में लगातार बढ़ोत्तरी देखने को मिली है। इस विषय पर आम लोगों ने अपना रोष भी जताया है और कई

नागरिक समूहों ने आंदोलन भी किये हैं। दक्षिण पूर्व एशिया -में 'सहमतियों का निर्माण' के संदर्भ में हुए कई शोध ये बताते हैं कि 'रणनीतिक संचार' की सफलता के लिए हर लक्षित देश के लिए अलग नीति बनाई जाती है। दक्षिण- पूर्व एशिया में चीनी भाषा के मीडिया संस्थानों पर पकड़ मजबूत करने की कोशिशें लगातार की जा रही हैं। इसके अलावा, चीन इस क्षेत्र के प्रख्यात पत्रकारों को लगातार अपने यहां आमंत्रित कर रहा है और विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भागीदारी को प्रोत्साहित भी कर रहा है।

भारतीय परिप्रेक्ष्य में यह साफ़ दिखाई देता है कि मई 2020 के बाद से चीनी मीडिया टाइम्स ग्लोबल), चीन डेली, शिन्हुआ) ने भारतीय नागरिकों तक अपने भ्रमित सूचनाओं के हमले बढ़ा दिए हैं। यह 'ग्लोबल टाइम्स' की रूस के 'कुरील आइलैंड' पर 8 अप्रैल 2023 की खबर में परिलक्षित होता है। एक और उदाहरण में हम देखते हैं कि कैसे सीडीएस जनरल बिपिन रावत की मृत्यु के समय, भारतीय सैन्य बलों की कमियों को बढ़ा-चढ़ा कर प्रकाशित किया गया। फिलहाल, 'रणनीतिक संचार' के संदर्भ में भारत के सामने निम्नलिखित चुनौतियां दिखती हैं :

1. विभिन्न देशों और विभिन्न मीडिया- स्पेस में संदेशों का प्रसार करना।

2. मीडिया संपादकों की 'कुछ विशेष खबरों को नकारने' की बाधाओं को पार करने की क्षमता विकसित करना।

3. राजनीतिक- आर्थिक व्यवस्था में मीडिया के कार्यविधि को बेहतर ढंग से समझना अध्ययन करना। -

4. देश की सीमाओं से परे 'रणनीतिक कथानक' की पहुंच सुनिश्चित करना

वक्ता ने अंत ने भारत के लिए आगे की राह पर प्रकाश डालते हुए निम्नलिखित बिंदुओं को सामने रखते हैः

1. 'रणनीतिक संचारकी ' प्रक्रिया में ज्यादा से ज्यादा संचार विशेषज्ञों की भूमिका सुनिश्चित हो।

2. अलग -- अलग दर्शक समूहों के लिए प्रभावी रणनीतिक संचार की कोशिशें हों। इसमें अनिवासी भारतीयों और भारतीय मूल के लोगों की बड़ी भूमिका हो सकती है।

3. 'सूचना युद्ध ब्रिगेड' जैसी कोशिशों को आगे बढ़ाना चाहिए, जिसका साल 2004 में कश्मीर में सफल तरीके से उपयोग किया गया था। जिसे किन्हीं कारणों से बाद में समाप्त कर दिया गया।

4. लक्षित समूहों तक पहुंच को सुनिश्चित करने के लिए 'राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति' में व्यापक सुधार के लिए कदम उठाए जाने चाहिए।

5. इस सन्दर्भ में पर्याप्त शोधअकादमिक/ समर्थन का भी अभाव सहज ही दिखाई देता है।

6. साथ ही, 'राष्ट्रीय सामरिक संचार प्राधिकरण' जैसी संस्था का निर्माण समय की ज़रूरत दिखती है।

व्याख्यान का समापन एक रोचक प्रश्नउत्तर सत्र के साथ - हुआ।

ये रिपोर्ट, डॉ. जतिन कुमार ने तैयार की है, जो मनोहर पर्रिकर रक्षा अध्ययन और विश्लेषण संस्थान में 'रिसर्च एनालिस्ट' हैं।